Abnormal Psychology
Dr. (Mrs) Kumari Kanta ①
Associate Professor
Marwari College, Darbhang
Mob-7294039693

D II (H On)
Date 13.4.20
Lecture No- 8

Conversion Hysteria

Q. What do you understand by conversion hysteria. Describe its symptoms, causes and treatment.

Ans. अन्य रोगों की अपेक्षा हीस्टीरिया मनःस्ताप (Conversion hysteria) एक गम्भीर मानसिक रोग माना जाता है। हिस्टीरिया के स्वरूप को जानने के लिए सबसे पहले इसके शाब्दिक अर्थ को जानना आवश्यक है। हीस्टीरिया शब्द की उत्पत्ति यूनानी शब्द 'Hystera' से हुई है, जिसका अर्थ गर्भाशय होता है। अतः शाब्दिक अर्थ के आधार पर इसे गर्भाशय से सम्बन्धित मनोविकृति कहा जा सकता है। हिप्पोक्रेटीज नामक यूनानी चिकित्सक ने यह विचार व्यक्त किया कि कुण्ठित गर्भाशय सेक्स इच्छा और संतान प्राप्ति की इच्छा के कारण शरीर में भ्रमण करता है। उनकी यह इच्छा पूरी नहीं होने पर स्त्री हीस्टीरिया से पीड़ित हो जाती है। इसके पश्चात फ्रायड ने इस रोग के विषय में अध्ययन किये और बतलाया कि हिस्टीरिया का कारण कामजनित अन्तर्द्वन्द्व होता है। उन्होंने इस मानसिक रोग को Conversion hysteria कहा।

Cameron के अनुसार, "कनवर्जन प्रक्रिया वह प्रतिक्रिया वह प्रतिक्रिया है, जिसमें अचेतन अन्तर्द्वन्द्व किसी शारीरिक लक्षण में रूपान्तरित हो जाता है। साथ ही साथ यह प्रक्रिया रोगी की चिन्ता और तनाव को अन्तर्द्वन्द्व की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के द्वारा कम करती है।"

Coleman के अनुसार "कनवर्जन हिस्टीरिया में वह मनःस्तापी प्रतिमान सम्मिलित हैं, जिसमें

Notes दैहिक रोग निदान शास्त्र के अभाव में कुछ शारीरिक लक्षण उत्पन्न होते हैं।"

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि कनवर्जन हिस्टीरिया एक ऐसा मानसिक रोग है, जिसमें व्यक्ति का अचेतन अन्तर्द्वन्द्व शारीरिक लक्षणों में परिवर्तित हो जाता है।

Symptoms of Hysteria :-

हिस्टीरिया के लक्षणों को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है। ① ज्ञानेन्द्रीय लक्षण (Sensory Symptoms) — हिस्टीरिया में कोई भी ज्ञानेन्द्रिय लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं जैसे — कान सम्बन्धी, आँख सम्बन्धी, घ्राण सम्बन्धी, त्वचा सम्बन्धी और जिह्वा सम्बन्धी। इन पाँचों ज्ञानेन्द्रियों से पाँच प्रकार के लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं।

(i) संवेदनशून्यता (Anaesthesia) (ii) संवेदनशीलता का आंशिक ह्रास (Hypesthesia) (iii) संवेदन की तीव्रता (Hyperesthesia) (iv) विचित्र संवेदना (Paresthesia) (v) दर्द की संवेदना की शून्यता (Analgesia). ये पाँचों लक्षण पाँचों ज्ञानेन्द्रियों में से किसी भी ज्ञानेन्द्रिय को प्रभावित करके उसमें परिलक्षित हो सकते हैं। जैसे — कान से कम सुनना, कुछ सुनने में क्षीणता। विचित्र शब्द सुनाई देना, अधिक तीव्रता से सुनाई देना और कान में विकार होने पर भी दर्द का अनुभव न होना आदि। इसी प्रकार आँख नाक, त्वचा तथा जिह्वा से सम्बन्धित विकार दिखाई दे सकते हैं।

हिस्टीरिया के रोगियों में मुख्यतः जांघ असंवेदिता (Thigh anaesthesia), बधिरता (Anacusia), अन्धापन (Anopsia), अघ्राणता (Anosmia) देखे जाते हैं। ये चाहे लक्षण त्वचा, कान, घ्राण और आंख इन्द्रियों से सम्बन्धित हैं। इन इन्द्रियों से सम्बन्धित हिस्टीरिया के कुछ लक्षण इसप्रकार हैं (क) ~~जांघ असंवेदिता~~ –

(i) जांघ असंवेदिता (Thigh anaesthesia) – इसमें स्पर्श सम्बन्धी संवेदना समाप्त हो जाती है।

ii) अघ्राणता (Anosmia) :— इसमें व्यक्ति की सूंघने की शक्ति समाप्त हो जाती है।

iii) अन्धापन (Anopsia) :— इस लक्षण से पीड़ित रोगी में दृष्टि संवेदना समाप्त हो जाती है। एक स्त्री को कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। जांच करने के बाद मनोविश्लेषण से पता चला कि उस स्त्री को पुत्र की इच्छा थी किन्तु उसे पुत्र की बजाय पुत्री हुई। अतः वह हमेशा सोचती रहती थी कि उसकी लड़की उसके सामने न आए। मां के इस व्यवहार के कारण लड़की भी उससे घृणा करने लगी यह घृणा इतनी बढ़ी कि उस स्त्री को दिखाई देना ही बन्द हो गया। पुनः मनोचिकित्सा द्वारा उसकी दृष्टि लौट आई।

iv) बधिरता (Anacusia) :— इस लक्षण से पीड़ित रोगी में सुनने की क्षमता समाप्त हो जाती है।

2) गत्यात्मक लक्षण (Motor Symptoms) :—

हिस्टीरिया में कुछ motor Symptoms भी देखे जाते हैं जो इसप्रकार हैं :—

i) कम्पन (Trembling) :— हिस्टीरिया में भय

और तीव्र संवेदनशीलता की स्थिति में शरीर कांपने लगता है।

ii) ऐंठन (cramps) :- हिस्टीरिया का एक लक्षण पेशीय ऐंठन भी होता है। पेशीय ऐंठन व्यक्ति में किसी कार्य में बार-बार असफलता मिलने या कुण्ठा की स्थिति में होती है। इसमें कभी-कभी व्यक्ति शारीरिक क्रियाएं भी नहीं कर पाता।

iii) पेशीय संकुचन (muscle contraction) :- हिस्टीरिया में व्यक्ति की मांसपेशियों में दृढ़ता आ जाती है। इन रोगियों को कभी-कभी चलने फिरने में भी परेशानी होती है।

iv) टिक (Tic) :- टिक भी हिस्टीरिया का एक लक्षण है। इसमें चेहरे, गर्दन, हाथ-पांव की पेशियों में स्फुरण होता है। जैसे - सिर को झटकना, पलक झपकाना, मुंह के कोने का फड़कना आदि। ये गतियां स्वचालित रूप से होती हैं और रोगी को इसका ज्ञान भी नहीं होता है। ये लक्षण आन्तरिक द्वन्द्व के परिणामस्वरूप होते हैं।

v) वाणी विकार (speech disorder) :- इसके रोगी में कुछ गत्यात्मक लक्षण वाणी सम्बन्धी भी देखे जाते हैं। जैसे - आवाज बन्द हो जाना, खांसने पर आवाज निकलना, गूंगा हो जाना, हकलाना आदि।

vi) आक्षेप (convulsions) :- आक्षेप एक प्रकार के दौरे की स्थिति है जो मिर्गी के दौरे के समान ही होता है। ये दौरे अधिकांश उस समय पड़ते हैं जब रोगी अनेक व्यक्तियों के बीच होता है।

Notes

vii) लकवा (Paralysis) :— इसमें व्यक्ति के शरीर का कोई अंग निष्क्रिय हो जाता है।

③ आन्तरांगी लक्षण (Visceral Symptoms) :— आन्तरांगी से अभिप्राय शरीर के आन्तरिक अंगों में परिलक्षित होने वाले लक्षणों से है। इनमें मुख्य लक्षण हैं – सिर दर्द, गले का बन्द हो जाना, खांसी, उल्टी, भोजन में अरुचि होना, जी मिचलाना, सांस लेने में कठिनाई आदि।

Causes of Conversion hysteria

Coleman ने हिस्टीरिया के निम्नलिखित कारणों की चर्चा की है।

1) सुझावों की अधिक ग्रहणशीलता (High acceptancy of Suggestion) :— जिन व्यक्तियों का अहं दुर्बल होता है उनमें सुझाव ग्रहणशीलता अधिक होती है और प्रतिबल सहनशीलता (stress tolerance) कम होती है। वे अकारण चिन्तित रहते हैं, जिसके कारण व्यक्ति में conversion hysteria के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

2) खतरनाक परिस्थिति में सुरक्षा (Defense against dangerous situation) :— जब व्यक्ति भयावह परिस्थिति से बचने का प्रयास करता है तो उसमें अन्तर्द्वन्द्व की प्रबलता उत्पन्न हो जाती है, जिससे उसे हिस्टीरिया के दौरे पड़ने लगते हैं।

3) खतरनाक इच्छाओं से सुरक्षा (Defense against dangerous desires) :— जब व्यक्ति अपनी खतरनाक इच्छाओं और आवेगों से बचाव करना चाहता है तो इस बचाव की प्रतिक्रिया के परिणाम-

Notes स्वरूप भी यह हीस्टीरिया का शिकार हो सकता है।

4) अपराध भावना और स्वयं को दण्डित करने की इच्छा (guilt feeling and self punishment desire):- कभी-कभी व्यक्ति की अपराध भावना भी conversion hysteria का कारण होती है।

5) कुछ अन्य कारण (some other causes):- कभी-कभी व्यक्ति द्वारा इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किए गए प्रयास भी कनवर्जन हिस्टीरिया के कारण होते हैं।

Treatment

कनवर्जन हिस्टीरिया के रोगी के उपचार के लिए ये विधियां उपयुक्त हैं:-

1) सम्मोहन (Hypnosis):- प्राचीन काल में हिस्टीरिया के उपचार के लिए यह विधि अपनाई जाती थी। इस विधि का प्रयोग फ्रायड के समय तक सफलतापूर्वक किया जाता रहा। किन्तु इस विधि के द्वारा उपचार लम्बी प्रक्रिया द्वारा होने के कारण अब इस विधि को नहीं अपनाया जाता है।

2) मनोविश्लेषण विधि (Psycho-analysis method):- इस विधि द्वारा कनवर्जन हिस्टीरिया का स्थायी इलाज होता है। इस विधि में मनोचिकित्सक सर्वप्रथम मनोविश्लेषण द्वारा रोग के कारणों का पता लगाता है, तब उन कारणों को दूर करके रोगी को रोग मुक्त करता है।

3) साक्षात्कार विधि (Interview method):- इस विधि में पहले रोगी से वार्तालाप द्वारा उसके व्यवहार तथा जीवन शैली की जानकारी प्राप्त की जाती है तब व्यवहार और जीवनशैली को परिवर्तित करके रोगी को मनःस्ताप से मुक्त किया जाता है।